प्रकृति की विचित्र लीला..

क्या खूब है, उसकी अद्भुत लीला, विचित्र प्राकृतिक नजारा,

जहाँ न ऊँचे बड़े पेड़ों की छाँव, न ही फूलों से लदी डालियाँ,

इठलाती सागर की शांत लहरे, अपने ही रंग- ढंग में बहती,

लगता है बेखबर.. उफनते शोर से, शायद भूली है चाल अपनी,

सिर्फ जिम्मेदारी है निभाना, इन कुदरती तटीय रक्षक 'मैंग्रोजों' की,

जीवनयापन करना, बस ध्येय सागर का, रमती बहती उसकी लहरे,

ऐसा ही स्वरूप उसका, सहजता से कराए, अपनी उपस्थिति का अहसास ,

क्या अद्भुत प्राकृतिक दृश्य...

रोज की तरह सूर्योदय समय पर, उसकी लालिमा पूरे शबाब पर,

पंछियों की घर वापसी भी, कुछ भिन्न तस्वीरें, उजागर रही करती,

सूर्यास्त पर, झींगुरों की जुगल-बंदी, बस कमरे सन्नाटे को तोड़ती,

शहर की भीड़भाड़ से दूर, प्रकृति का, यह नजारा कुछ अलग व अद्भुत,

वृक्ष प्रजातियां 'मैंग्रोव' बीच मिला अवसर, उन्हें जानने समझने का,
दिलचस्प था प्राकृतिक दृश्य, सागर तट सटे, छोटे घने 'मैंन्ग्रोव वन'
एक दूजे का साथ देते, 'जीवनचक्र' है निर्भर इनका, सिर्फ खारे पानी में,
खूबसूरती से करें प्रकृति संरक्षण, दीदार-ए अनुभव, कर दे आश्चर्यचकित।
ऐसी ही है दुनिया उनकी, बस काफी है.. समझने-बुझाने के लिए,
दे जाए कई सीख, है जगाये आंतरिक व बाहरी शक्ति को, है अनमोल..
प्राकृतिक संसाधन, उन्हें संभालना और सँजोना भी, है जिम्मेदारी हर प्राणी की,
इन्हें बेरुखी से अनदेखा करना, और चुनौती देना, तो निस्संदेह होगा घातक,

इस ओर उठाये हर एक कदम, 'प्रकृति सौंदर्य' में लगाए यूं ही 'चार चांद',
है नहीं मुश्किल, उसके करीब जाना, उस निराली छठा को, कैद करना,
विश्वास माने.. उसके सौन्दर्य पर मोहित होना, है सुखद आत्मीय अहसास,
न करें वंचित अपने को, इस प्रक्रिया से, बढ़ाए नजदीकियां, बिताए समय।
प्रकृति की छत्रछाया में !

गीतांजलि सक्सेना

16 Nov 2022